ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं की विभिन्न अवस्थाओं में उत्तम प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियां

डॉ. संजय कुमार मिश्र[1] एवं डॉ. विकास सचान[2]

1. पशु चिकित्सा अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश
2. सहायक आचार्य, मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, दुवासु, मथुरा, उत्तर प्रदेश

पशुपालन कृषि का एक अभिन्न अंग है जो देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पशुपालन में कृषि उत्पादों का समुचित उपयोग होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं सीमांत किसानों एवं खेतिहर मजदूरों को पशुपालन से पूरे वर्ष रोजगार उपलब्ध होता है। हमारे देश में घटती कृषि योग्य भूमि बढ़ती आबादी व बेरोजगारी के समस्याओं के समाधान हेतु पशुपालन व्यवसाय का बहुत ही महत्व है। इसके लिए यह आवश्यक है कि किसानों को पशुओं की उत्तम रखरखाव एवं प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों का ज्ञान भली-भांति हो जिससे अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

1. गर्भित पशुओं की देखभाल एवं उचित प्रबंधन:

गर्भित पशुओं को बच्चा देने से 3 महीने पूर्व अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए। उसके रखरखाव एवं खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इस अवस्था में गर्भ में बच्चे की उचित विकास के साथ-साथ मादा अधिक दूध उत्पादन के लिए अपने आपको तैयार करती है। गर्भित पशुओं को डराना, धमकाना, दौड़ाना, मारना आदि क्रियाएं नहीं करनी चाहिए अन्यथा की स्थिति में गर्भपात होने का खतरा हो सकता है। गाभिन पशुओं को लड़ाकू पशुओं से अलग रखना चाहिए। गाभिन पशुओं को ब्याने के 2 महीने पहले दूध निकालना धीरे-धीरे बंद कर देना चाहिए ताकि अयन को आराम मिल सके तथा गर्भ में पल रहे बच्चे का समुचित विकास हो सके। इस अवस्था के दौरान मादा अपने शरीर की भरपाई करती है तथा वजन में वृद्धि करती है।

2. पशुओं का प्रसव के दौरान समुचित प्रबंधन:

पशुओं के प्रसव के दौरान उनके समीप किसी प्रकार का शोर शराबा नहीं होना चाहिए इससे पशु डर जाता है एवं ब्याने की स्वाभाविक क्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। प्रतिक्रिया आरंभ होने का सबसे मुख्य लक्षण है कि पशु के योनि मार्ग से श्लेष्मा निकलना और अशांत रहना। ऐसे समय पशु को अनावश्यक नहीं छेड़ना चाहिए। इस समय योनि द्वार से पानी की थैली बाहर निकलती है जिसे अपने आप ही फटने दें। बच्चा पहले सामने के पैरों पर सिर रखकर टिकी हुई अवस्था में बाहर आता है।

यदि प्रसव स्वाभाविक रूप से 3 से 4 घंटे में ना हो तो किसी भी पंजीकृत पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। प्रसव के बाद योनि द्वार, पूछ तथा पीछे के आसपास के हिस्सों को गुनगुने पानी में पोटेशियम परमैंगनेट के 0.1 प्रतिशत घोल से साफ कर दे। सामान्यता जेर 4 से 6 घंटे में बाहर निकल जाता है परंतु यदि जेर 12 घंटे तक अपने आप ना निकले तो योग्य पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। जेर को पशु खा सकता है अतः किसी स्थान पर गड्ढे में गढ़वा दे। यदि पशु जेर खा जाए तो उसे अपच हो जाएगा और उसका दुग्ध उत्पादन भी कम हो जाएगा। ब्याने के तुरंत बाद पशु को गुड़ या शीरा गुनगुने पानी में घोलकर खिलाना चाहिए एवं आसानी से पचने वाला दस्तावर चारा दाना 3 से 5 दिनों तक खिलाना चाहिए। उसके पश्चात धीरे-धीरे 7 से 10 दिन में उसे सामान्य आहार में लाना चाहिए। प्रसव के बाद पहली बार पशुओं के थन से पूरा दूध नहीं निकालना चाहिए क्योंकि पूरा दूध निकालने से अधिक दूध देने वाले पशुओं को मिल्क फीवर होने का भय रहता है। दूध निकालने से पहले स्थान व शरीर की मौसम के अनुसार ताजी व गर्म पानी से सफाई करनी चाहिए। बच्चा देने वाले स्थान पर फिनायल अथवा एंटीसेप्टिक घोल का छिड़काव कर सफाई करनी चाहिए। नवजात बच्चे को कम से कम 10 दिन तक अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। बच्चा दिए हुए पशुओं को खुले स्थान पर रखना चाहिए ताकि उन्हें ताजी हवा मिल सके। परंतु सर्दियों में पशु एवं नवजात शिशु को ठंडी हवाओं से बचाएं और धूप निकलने पर ही बाहर निकालना चाहिए।

3. **नवजात शिशु की देखभाल:**

नवजात शिशु की देखरेख उसके जन्म से पूर्व ही माता के गर्भ से शुरू हो जाती है। इसलिए पशु के ब्याने के 3 महीने पहले से ही उनको आवश्यकतानुसार समुचित चारा दाना देना चाहिए। नवजात पशु के नाक तथा मुंह से श्लेष्मा को निकाल देना चाहिए जिससे कि वह सामान्य रूप से सांस ले सकें। यदि बच्चा सामान्य रूप से सांस न ले रहा हो तो पिछले घुटने पकड़कर उल्टा लटका देना चाहिए ताकि श्लेष्मा अपने आप बाहर निकल जाए या नाक में घास की पत्ती डालने से पशु छींकने लगता है और श्लेष्मा नाक से बाहर निकल आती है। इसके पश्चात बच्चे को उसकी मां के पास छोड़ देना चाहिए। साधारणतया मां बच्चे को चाट कर उसे साफ एवं सूखा कर देती है। यदि माता बच्चे को नहीं चाटती है तो बच्चे को किसी मोटे कपड़े या साफ बोरी से रगड़ कर साफ़ करें तथा सुखाएं। नवजात बच्चे के शरीर पर थोड़ा सा नमक छिड़कने से पशु बच्चे को चाटना शुरू कर देता है। शरीर चाटने से बच्चे को सांस लेने में सहायता मिलती है। अक्सर नाभि सूत्र अपने आप टूट जाती है। वहां पर टिंक्चर आयोडीन अवश्य लगाएं। यदि नाभि सूत्र जुड़ी हुई हो तो उसे नई ब्लेड से 3 से 5 इंच रखकर काट दें और स्वच्छ धागे से बांध कर उस पर टिंचर आयोडीन लगाएं जिससे किसी तरह की बीमारी बच्चे को न लग पाए। टिंचर आयोडीन 1 सप्ताह तक लगाते रहे। नवजात बच्चे को जन्म के तुरंत बाद ही खींस पिलानी चाहिए।

नवजात बच्चा यदि अपने आप खड़ा नहीं होता है तो उसे सहारा देकर खड़ा करें तथा मां के थन के पास ले जाकर दो चार बार कोलोस्ट्रम को उसके मुंह में दें जिससे कि उसे खीस अर्थात कोलोस्ट्रम का स्वाद मिले और वह अपनी मां के थन से ठीक से कोलोस्ट्रम पीने लगे। कोलोस्ट्रम पिलाना अति आवश्यक है क्योंकि इसमें गामाग्लोबलिन होता है जो कि नवजात बच्चों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है अर्थात जीवन पर्यंत के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करता है। परंतु कोलोस्ट्रम आवश्यकता से अधिक नहीं पिलाना चाहिए। इसे दिन में तीन से चार बार उसके शारीरिक वजन के दसवीं भाग की दर से खिलाना चाहिए।

कोलोस्ट्रम पिलाने के 4 से 6 घंटे के अंदर बच्चों का मल विसर्जन अपने आप हो जाता है। यदि किसी कारणवश ऐसा नहीं हो तो आधा चम्मच अरंडी का तेल पिलाना चाहिए।

नवजात बच्चों को ठंडी हवा व खराब मौसम से बचाएं तथा गर्म स्थान में रखें जिससे कि उसे निमोनिया ना हो परंतु उसके रखने का स्थान साफ-सुथरा व हवादार तथा फर्श पर बिछावन अवश्य होना चाहिए। जब बच्चा 8 से 10 दिन का हो जाए तो उसे सूखा भूसा हरा चारा खिलाएं इससे बच्चे को कब्ज नहीं होती है व पाचन सही रहता है।

जब बच्चा लगभग 15 दिन का हो जाए तो उसे अंता क्रमी नाशक औषधि पान कराएं इससे बच्चा स्वस्थ रहेगा तथा वृद्धि अच्छी होगी। जब बच्चा 3 से 4 माह का हो जाए तो उसे छूत की बीमारियों के टीके अवश्य लगवाने चाहिए।

जब बच्चा एक माह का हो जाए तो उसे प्रतिदिन 100 ग्राम संतुलित पशु आहार देना शुरू करें। दूसरे महीने से 200 ग्राम तीसरे महीने से 300 ग्राम चौथे महीने से 400 ग्राम पांचवे महीने से 700 ग्राम छठे महीने से 1 किलोग्राम संतुलित पशु आहार प्रतिदिन देना चाहिए। संतुलित पशु आहार 2 वर्ष की अवस्था तक लगभग 1 किलोग्राम प्रति दिन देना चाहिए।

समय-समय पर छूत की बीमारियों से बचाव हेतु सुरक्षात्मक टीका लगवाना चाहिए। 2 से 3 वर्ष की अवस्था में पशुधन बीमा करवाएं। गर्भित होने की अवस्था में पहले 3 माह पर आहार की मात्रा डेढ़ किलोग्राम पर दिन 4 से 7 माह तक 2 किलोग्राम प्रति दिन इसके पश्चात बच्चा देने तक 3 किलोग्राम प्रति दिन आहार खिलाना चाहिए।

4. **दुधारू पशुओं का प्रबंधन:**

दुधारू पशुओं के रहने का स्थान साफ सुथरा एवं हवादार होना चाहिए। अधिक सर्दी गर्मी वर्षा से बचाव हेतु उपाय अत्यंत आवश्यक है। पशुशाला में सप्ताह में एक बार फिनाइल का छिड़काव अवश्य करें जिससे पशुशाला का फर्श रोगाणु रहित रहे। इस प्रकार सफाई रखने से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन में सहायता मिलती है। पशुओं को मौसम के अनुसार नहलाना चाहिए। इससे धूल बाल गंदगी जुए कलीले आज साफ हो जाते हैं तथा शरीर में लगे चोट जख्म का पता लग जाता है जिससे इनका उपचार समय से हो जाता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं को नियमित रूप से उसके शरीर व दूध के मुताबिक संतुलित पशु आहार से खिलाए। दूध दुहने में लगभग 12 घंटे का अंतर रखें इससे दूध की मात्रा एवं संरचना में अधिक परिवर्तन नहीं आएगा। दूध का दुहान करते समय सूखा चारा न खिलाएं क्योंकि हवा चलने पर वह दूध में गिरेगा। दुधारू पशुओं हेतु 12 महीने हरे चारे का प्रबंध रखना चाहिए इससे पशुओं की चराई पर लागत कम आती है तथा दुग्ध उत्पादन भी बढ़ता है। दुधारू पशुओं को छूत की बीमारियों से बचाव हेतु समय समय पर टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए। पशुओं के बीमार होने पर पंजीकृत पशुचिकित्सक को दिखाएं। ऐसा करने से कम लागत पर पशु स्वस्थ अधिक दूध उत्पादन देता है। पशुओं को व्यायाम मिल जाता है तथा स्वस्थ रहते हुए उनसे अधिक दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ पशुशाला की सफाई अच्छी रहती है।